International Journal of Arts & Education Research

# जनसंख्या विकास एवं कृषि नगर पालिका रूड़की के सन्दर्भ में एक सामान्य अध्ययन

**डॉ० (श्रीमती) अलका तोमर**
शोध निर्देशिका
राजनीति विज्ञान विभाग
एच०एन०बी० गढ़वाल (केन्द्रीय) विश्वविद्यालय
श्रीनगर (गढ़वाल)

**श्रीमती आशा शर्मा**
शोधार्थी
राजनीति विज्ञान विभाग
एच०एन०बी०गढ़वाल(केन्द्रीय) विश्वविद्यालय
श्रीनगर (गढ़वाल)

**सारांश–**
जनसंख्या वृद्धि एवं कृषि विकास एवं पर्यावरणीय समस्यायें भारत सदृश राष्ट्र के लिए महत्वपूर्ण भौतिक, आर्थिक एवं सामाजिक समस्यायें हैं। इन समस्याओं के अध्ययन से कृषि विकास तथा उस पर आश्रित जनसंख्या तदोपरान्त पर्यावरणीय समस्याओं के अर्न्तसम्बन्धों का विश्लेषण आसानी से किया जा सकता है।
**कुंजी शब्द–** जनसंख्या विकास, कृषि, सामान्य अध्ययन।

**प्रस्तावना–**
कृषि विकास तथा जनसंख्या विकास का एक दूसरे के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। जनसंख्या का दबाव निरन्तर कृषि पर बढ़ता ही जा रहा है। भविष्य की एक भयावह स्थिति वर्तमान भारत में परिलक्षित हो रही है। इससे क्षेत्र में पर्यावरण में निरन्तर गिरावट आ रही है। अतः इस समस्या के समाधान हेतु क्षेत्रीय स्तर पर कृषि एवं जनसंख्या अनुपात से सम्बन्धित विभिन्न पक्षों का समालोचनात्मक विश्लेषण कर पर्यावरणीय समस्याओं का निराकरण एवं कृषि विकास पर जनसंख्या के वास्तविक दबाव तथा कृषि विकास की वरीयता का मूल्यांकन कर उन पर जनसंख्या का दबाव कम करके पर्यावरणीय समस्याओं का निराकरण अत्यावश्यक है। इस उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए रूड़की का चयन किया गया है।

**रूड़की– एक सामान्य परिचय–**
एक राजपूत सरदार की पत्नी रूड़ी के नाम पर बसे रूड़की का उल्लेख 1887 के सहारनपुर गजेटियर में **'Rurki'** के नाम से मिलता है। गंगा व यमुना के मध्य बसा यह क्षेत्र आदिकाल से ही उत्तम जलवायु, सिंचाई की सुविधा तथा उपजाऊ भूमि के कारण मनुष्यों को रहने के लिए आकर्षित करता रहा है। अकबर के शासनकाल में रूड़की महाल (परगना) में केवल 2768 बीघे जमीन थी, जिससे रू० 16,28,365=00 दाम मालगुजारी प्राप्त होती थी। वर्तमान में रूड़की नगर का भौगोलिक क्षेत्रफल 8.1129 वर्ग किलोमीटर है। रूड़की एक सघन जनसंख्या वाला क्षेत्र है। जिसमें साक्षरता, लिंगानुपात तथा आयुवर्ग एवं व्यावसायिक संरचना में अत्यधिक विभेद दर्शनीय होता है।

**रूड़की– भौगोलिक पृष्ठभूमि–**
रूड़की नगर हरिद्वार के पश्चिम तथा विश्व मानचित्र के $29^0 51'$ उत्तरी आक्षांश तथा $77^0 53'$ पूर्वी देशान्तर पर स्थित गंगा की सहायक नदी सोनाली के दक्षिणी किनारे पर समुद्रतल से 274 मी० की ऊँचाई पर स्थित है। यह नगर देश की राजधानी दिल्ली से हरिद्वार–देहरादून राष्ट्रीय राजमार्ग पर 172 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

रूड़की धरातलीय दृष्टि से ऊपरी गंगा–यमुना के दोआब में स्थित है जोकि शिवालिक पहाड़ियों से नदियों द्वारा लाये गये जलोढ़ के परतदार जमाव से मिलकर बना हुआ है। विस्तृत मैदानी भू–भाग की संरचना के विषय में आस्ट्रियन भगर्भवेत्ता एडवर्ड स्वेस, सर सिडनी बर्राड, वाडिया और कृष्णन के विचार महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय हैं। रूड़की का सम्पूर्ण मैदानी भाग यहाँ पर बहने वाली नदियों के निक्षेप से निर्मित है।

ऊपरी परतदार चट्टानों के नीचे कंकड़, बालू मिट्टी का विस्तार है जिस पर नदियों द्वारा लाये गये निक्षेपों का निरन्तर विस्तार होता रहता है। रूड़की का अधिकांश क्षेत्र उपजाऊ नूतन जलोढ़ मिट्टी से आच्छादित है जिसमें दोमट, क्षारीय बलुई मिट्टी पायी जाती है।

**रूड़की– जलवायुवीय परिचय–**

रूड़की की जलवायु मृदु मानसूनी है जिसमें गर्मियों में तीव्र गर्मी और जाड़ों में अधिक ठण्ड पड़ती है। वर्षा की मात्रा सामान्य है तथा तापमान ग्रीष्मकाल में अधिकतम $40^0$C से $42^0$C तक एवं शीत काल में $2^0$C से $3^0$C तक पाया जाता है। सामान्यतः रूड़की का औसत तापमान $23.7^0$C तक पाया जाता है। वर्षा का औसत सामान्यतः 1170 मिली मीटर तक पायी जाती है। जब जलवायु के विविध अध्ययन हेतु क्षेत्र को उष्ण ग्रीष्मकाल, आर्द्रग्रीष्मकाल या वर्षा ऋतु, शरदकाल तथा शीतकाल में बाँटा गया है। क्षेत्र में स्थानीय तथा क्षेत्रीय स्तर पर भौतिक कारकों में विभेद दर्शनीय है।

**रूड़की– जनांकिकीय परिचय–**

रूड़की की जनसंख्या 2001 के अनुरूप 114811 है जिसमें 50950 महिलायें तथा 63861 पुरूष हैं। यहाँ पर प्रति हजार पुरूषों पर महिलाओं की संख्या 798 है।

**रूड़की– साक्षरता परिचय–**

रूड़की के जनांकिकीय आँकड़ों का यदि हम सूक्ष्म अध्ययन करें तो हम पाते हैं कि क्षेत्र में साक्षर व्यक्ति एंव साक्षरता का प्रतिशत ग्रामीण एवं नगरीय तथा धार्मिक स्तर पर अत्यधिक विभेद देखने को मिलता है। क्षेत्र में 1971 से 2001 के मध्य साक्षरता का प्रतिशत बढ़ा है परन्तु परिणाम सन्तोषजनक नहीं कहे जा सकते हैं। क्षेत्र में कुल साक्षरता का प्रतिशत 78.20 ही है। क्षेत्र में विकासखण्डवार साक्षरता में अत्यधिक विभेद है। रूड़की में साक्षरता विभेदीकरण में पुरूष साक्षरता का प्रतिशत 82.80 तथा महिला साक्षरता का प्रतिशत 72.4 है। रूड़की में महिलाओं की साक्षरता पुरूषों की साक्षरता से कम है।

**रूड़की– अर्थव्यवस्था परिचय–**

रूड़की जैसा कि विदित है कि एक कृषि प्रधान क्षेत्र है। कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था में भूमि उपयोग का अध्ययन महत्वपूर्ण है। रूड़की में कुल भूमि का 77.32 प्रतिशत भाग कृषित है। इसके अतिरिक्त 11.86 प्रतिशत अकृषित कार्यों, 6.5 प्रतिशत पर वन, 2.08 प्रतिशत भू-भाग पर परती, 1.16 प्रतिशत ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि है। शेष भूमि में उद्यान, चरागाह और कृषि योग्य बंजर भूमि सम्मिलित है। सिंचन सुविधाओं के विकास का कारण 37.89 प्रतिशत भाग दो फसली है। भूमि उपयोग में विकासखण्ड स्तर पर अनेकानेक विभिन्नतायें विद्यमान हैं। विकासखण्ड स्तर पर सर्वाधिक कृषित एवं वन्य क्षेत्र में भी अत्यधिक वैविध्य है।

रूड़की में भूमि उपयोग में कृषित तथा अकृषित क्षेत्र में शस्य प्रतिरूप का अध्ययन अत्यधिक महत्वपूर्ण है। कुल कृषित भूमि का 85 प्रतिशत भाग खाद्यान्न फसलों के अर्न्तगत आता है। जिसमें गेंहूँ, चावल, गन्ना आदि प्रमुख फसलें हैं। इसके अतिरिक्त बाजरा, ज्वार, दलहन, तिलहन, चारा, आलू आदि फसलें भी क्षेत्रीय आवश्यकताओं तथा व्यापारिक दृष्टिकोण से उगायी जाती हैं।

रूड़की में कृषि भूमि पर जनसंख्या वृद्धि का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। जिस अनुपात में कृषि भूमि के विस्तार की आवश्यकता है वह उस अनुपात में नहीं हो पा रहा है। इससे क्षेत्र में कृषि घनत्व पर निरन्तर वृद्धि हो रही है। यहाँ कृषि घनत्व लगभग 155 व्यक्ति प्रति किलोमीटर पाया जाता है। वहीं क्षेत्र में कुल फसलों का प्रति हेक्टेयर उत्पादन तो बढ़ा है साथ ही कुछ फसलों का प्रति हेक्टेयर उत्पादन में 4 गुना से लेकर 8 गुना तक वृद्धि हुई है। दलहन एवं तिलहनों के उत्पादन में अधिक वृद्धि परिलक्षित नहीं होती है। रूड़की क्षेत्र में कृषि विकास के साथ-साथ जनसंख्या के दबाव की स्थिति बनी हुई है। रूड़की में

कुल जनसंख्या एवं प्राप्त कुल संसाधनों के आधार पर जनसंख्या दबाव की स्थिति का आँकलन करना होगा। इस स्थिति में क्षेत्र में स्थान-स्थान पर विभिन्न स्तरों पर असमानता देखने को मिलती है।

रूड़की में कृषि पर जनसंख्या के दबाव के कारण अनेकों समस्यायें उत्पन्न हुई हैं। जिनमें पर्यावरणीय समस्यायें प्रमुख हैं जो निम्नलिखित हैं-

- मानव की उदरपूर्ति की समस्या बढ़ी है।
- कृषि की सघनता के कारण वनों का विनाश हो रहा है।
- परती भूमि के विनाश के कारण जल स्तर में गिरावट आयी है।
- जल प्रदूषण की समस्या भी उत्पन्न हो रही है।
- भूमि की प्राकृतिक उर्वरता में कमी दर्ज की गयी है।
- ऊसर व बंजर भूमि में वृद्धि हो रही है।
- क्षेत्रीय कृषकों पर ऋण का बोझ बढ़ता जा रहा है।
- जनसंख्या वृद्धि से पर्यावरण संकट भी बढ़ता जा रहा है।
- आर्थिक विषमता की स्थिति उत्पन्न हो रही है।
- बाढ़ व सूखे की समस्या भी जन्म लेती जा रही है।
- खाद्यान्न उत्पादन की दर घट रही है।
- प्रति व्यक्ति कैलोरी की स्तर निरन्तर विषाक्त हो रहा है।
- जल एवं मिट्टी के स्रोत प्राकृतिक रूप में प्रदूषित हो रहे हैं।
- पर्यावरणीय समस्यायें उत्पन्न हो रही हैं।

यदि समय रहते इन समस्याओं का निराकरण नहीं किया गया तो रूड़की में कृषि के विकास से अनेक समस्यायें उत्पन्न हो जायेंगी। इन समस्त समस्याओं के निराकरण हेतु निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत हैं-

- रूड़की में तीव्र गति से बढ़ रही जनसंख्या वृद्धि को आवश्यक रूप से नियन्त्रित किया जाना आवश्यक है। इस हेतु सरकार को शिक्षा एवं साक्षरता का स्तर बढ़ाकर तथा प्रशासनिक दृढ़ता के साथ टू-इन-वन का फार्मूला लागू करना होगा।
- परिवार कल्याण कार्यक्रमों को कागजों में सीमित न रखकर उन्हें प्रभावी बनाना होगा।
- रूड़की में रोजगार के वैकल्पिक साधनों को बढ़ाकर कृषि दबाव को कम करना होगा।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि रूड़की में व्यापक रूप से प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधनों की उपलब्धता के उपरान्त भी क्षेत्र में दुःख, दारिद्रय, वर्ग संघर्ष, असन्तोष, पीड़ा एवं क्षेत्रीय तथा अन्य आर्थिक-सामाजिक विशेष रूप से कृषि एवं जनांकिकीय विषमतायें विद्यमान हैं। इस हेतु प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधनों का सम्यक विकास करना होगा। प्राकृतिक संसाधनों का विदोहन करते समय कृषि एवं जनसंख्या विकास के साथ-साथ पर्यावरणीय समस्याओं पर भी ध्यान देना होगा। यदि इन पर्यावरणीय समस्याओं पर विकास के चलते हमने ध्यान न दिया तो वह दिन दूर नहीं जब हम विकास के चलते अन्यानेक पर्यावरणीय समस्याओं को बढ़ाते जायेंगे और विकास के स्थान पर हर क्षेत्र में विनाश को जन्म देंगे।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1. चांदना, आर०सी० (1987) 'जनसंख्या भूगोल', कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
2. वशिष्ट, के०के० (1998) 'भारतीय शिक्षा की नई दिशा' प्रकाशन- विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
3. ओड, एल०के० (1999) 'शिक्षा के नूतन आयाम' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
4. सांख्यिकीय पत्रिका, जनपद हरिद्वार-2001।
5. डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, हरिद्वार, 1990।